मोहर्रम क्यों और कैसे?

लेखक : जनाब मिर्ज़ा सज्जाद हुसैन साहब

जब तक नीलगगन पर तारागण आँख मिचौली खेलेंगे, चन्द्रमा की शीतल एंव मनोहर चन्द्रिका पड़ेगी, सूर्यदेव अपनी तेज़पूर्ण एंव सुनहरी किरणों से संसार को जगमगाएंगे, समीर के झोंके चलेंगे, मीन समुद्रों में रहेंगी तथा संक्षेप में जब तक यह प्राकृतिक छटा, छवि एंव सुन्दरता रहेगी, मोहर्रम मनाया जाएगा तथा इमाम हुसैन की करूणाजनक एंव विलापपूर्ण मृत्यु पर अश्रु–धारा बहायी जाएगी।

क्यों कि ऐसे ऐसे समय भी व्यतीत हुए जब कि मोहर्रम मनाने वालों को यातनाएं सहन करनी पड़ी, विध्न बाधाओं कष्टों एंव कठिनायों को डालकर उनको मोहर्रम मनाने से रोका गया, मृत्यु के घाट उतारा गया, वे आजीवन कारावास के दन्ड भोगी बने परन्तु मोहर्रम के मनाने में तनिक भी कभी न हुई। इतिहास के पृष्ठ इसके साक्षी हैं। अतः मेरा उपरोक्त कथन भी अतिश्योक्ति एंव असत्य की सीमा तक न पंहुचेगा।

आज से लगभग 1400 वर्ष पूर्व इमाम हुसैन एंव यज़ीद के बीच कर्बला के मैदान में घमासान युद्ध हुआ था। यद्यपि उसे युद्ध शब्द से विभूषित करना ही अशुद्ध है क्यों कि इमाम हुसैन तथा उनके सम्बन्धियों–साथियों ने सत्य पर शीश–बलिदान का प्रण कर लिया था न कि युद्ध करने का। वास्तव में हज़रत मोहम्मद की व्यवस्था के अनुसार खलीफा (धर्म प्रदर्शक) के पद् के अधिकारी इमाम हुसैन थे एंव द्वितीय बात यह थी कि इमाम हुसैन के ज्येष्ठ भ्राता इमाम हसन एंव यज़ीद के पिता मुआविया से युद्ध होने पर इस बात की सन्धि हुई थी कि इमाम हसन के पश्चात् इमाम हुसैन को ही ख़लीफ़ा का पद दिया जाएगा। परन्तु अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् यज़ीद स्वयं ख़लीफा बन बैठा। इमाम हुसैन ख़िलाफत के लोभी नहीं थे वह यज़ीद को ही ख़लीफा रहने देते परन्तु यज़ीद एक दुष्ट आचरण, कायर, आलसी, भोग विलासी एंव पापी पुरूष था। इमाम हुसैन ने विचार किया कि यदि इस्लाम का मार्ग प्रदर्शक ऐसा मनुष्य होगा तो निःसन्देह शीघ्रातिशीघ्र इस्लाम इस संसार से सदैव सदैव के लिए लुप्त हो जाएगा क्योंकि जैसा धर्म–प्रदर्शक होगा वैसे ही धर्मानुयायी। तो यज़ीद के आचरण एंव चरित्र इस्लाम धर्म सिद्धान्तों एंव नियमों से पूर्ण विपरीत तथा प्रतिइल थे तो अनुयायी उस वास्तविक इस्लाम को क्या जानते एंव धर्म के सिद्धान्तों से क्या परिचित होते? जो वह वास्तव में था तथा जो उसके वास्तविक आदेश थे। अतः वहां के निवासियों ने भी उसे अपना धार्मिक पथ प्रदर्शक (ख़लीफा) स्वीकार न किया क्योंकि वह भी यज़ीद को इसके अयोग्य समझते थे। अतः उन्होंने सहस्त्रों की संख्या में इमाम हुसैन के पास पत्र भेजे तथा कहा कि आप हमें मार्ग दर्शाने के हेतु यहाँ आइये, आप ही वास्तव में ख़लीफा पद अधिकारी हैं– इसका हमें ज्ञान है, आप ही हज़रत मुहम्मद के कथनानुसार धर्मिक अधिष्ठाता हैं– इससे हम परिचित हैं एंव यहां की जनता भी शतप्रतिशत यज़ीद के विपक्ष एंव आप के पक्ष में है। यदि इस समय आप हमें सत्य मार्ग प्रदर्शन नहीं कराते तो इस्लाम के अन्त होने का दोष आप पर एंव हमारे पापों का कारण आप होंगे। इमाम हुसैन ने ऐसे समय में जाना ही अपना कर्तव्य एंव परम धर्म समझा। अतः प्रथम अपने भ्राता हज़रत मुस्लिम को दूत–स्वरूप भेजा। वहां की जनता ने उनका अति स्वागत किया एंव प्रसन्नतापूर्वक अपना मार्ग दर्शक एंव धार्मिक अधिष्ठाता स्वीकार कर लिया। अतः हज़रत मुस्लिम ने इमाम हुसैन को पत्र प्रेषित किया और यही लिखा कि व्यक्ति आप के पक्ष में हैं, यज़ीद को अयोग्य एंव कायर समझते हैं। अतः आप यहां चले आइये। इधर जब यज़ीद को इसका ज्ञान हुआ कि व्यक्ति हमारे विपक्षी हो गये हैं तो उसने अपने सेनापति द्वारा अपना खूब झूठा एंव मिथ्यापूर्ण प्रचार कराया

तथा जनता जिस बात से यज़ीद को अयोग्य समझती थी कि वह दरिद्रों, अनाथों, विधवाओं एंव निर्धनों को सहायता न पंहुचाएगा उसी का अधिक प्रोपेगन्डा कराया कि वह दरिद्रों की इस प्रकार सहायता करेगा, अनाथों की इस प्रकार रक्षा करेगा, विधवाओं एंव असंरक्षकों की इस प्रकार सेवा करेगा इतना अधिक धन कोष से विधवाओं आदि को मासिक अथवा वार्षिक रूप में देगा, इतनी अधिक भूमि दरिद्रों आदि को दी जाएगी आदि। धन का लोभ मानव को अंधा बना देता है, खरा खोटा समझने की परख सत्य असत्य का ज्ञान मनुष्य को नहीं रह पाता। यज़ीद के झूठे प्रोपेगन्डे का प्रभाव भी पूर्ण रूपेण इस प्रकार पड़ा कि लोग हज़रत मुस्लिम के विपक्ष में हो गये तथा यह विपक्षता, शत्रुता तथा ईर्ष्या बढ़ती गई—यहां तक कि हज़रत मुस्लिम की अत्यन्त निर्दयता से हत्या की गयी एंव उनके शव का भी बड़ा अपमान किया गया। इध र इमाम हुसैन के पास जब पत्र पँहुचा तो हुसैन बालकों, बुद्धों, नवयुवकों, स्त्रियों को लेकर यात्रा के लिए रवाना हुए। काफ़ी व्यक्ति इमाम हुसैन के साथ इसलिए हो गय कि रण—क्षेत्र में विजयी होकर धन एंव आभूषण आदि के अधिकारी बनेंगे अथवा इमाम हुसैन स्वयं राज्य सिंहासन पर विराजमान होंगे तथा हम भी इमाम हुसैन के प्रेमी कहलाकर उच्च पद प्राप्ति के पात्र होंगे। अतः इमाम हुसैन अ0 मार्ग में यह कहते जाते थे कि मैं बलिदान होने जा रहा हूँ—शहीद होना ही मेरा परम ध्येय है। इस प्रकार इमाम हुसैन के साथ आने वाले समूह की संख्या का निरन्तर ह्रास होता जाता था। ध्यान एंव विचार करने की बात है यदि इमाम हुसेन का ध्येय लड़ना होता तो अपने सिपाहियों को इस प्रकार कम न करते। इस प्रकार अटल एंव अडिग साथियों के साथ इमाम हुसैन 2 मोहर्रम को कर्बला पँहुच गये। जल आदि की सुविधा के कारण इमाम हुसैन के सम्बन्धी तथा साथियों ने पहले फ़ुरात नदी के निकट अपने ख़ेमे (रहने के स्थान) लगाये तथा भूमि भी क्रय की परन्तु यज़ीद की आज्ञा हुई कि इमाम हुसैन के ख़ेमे नदी से दूर लगाये जाऐं। अतः नदी से दूर इमाम हुसैन के ख़ेमे लगाये गये यह वह स्थान है जहाँ के लिए यह उपमा दी जाती है कि दाना डाला जाए तो भुन जाए। इधर यज़ीद की ओर अनेकों स्थानों से सेनाएँ आ आ कर एकत्रित हाने लगीं जिसके घोड़ों की टापों से सारा बन कांपता था। उसी स्थान पर जहां दाना डाला जाय तो भुन जाए, सात मुहर्रम से इमाम हुसैन तथा उनके छोटे—छोटे बालकों पर जल बन्द कर दिया गया, नदी के चारों ओर सिपाही नियुक्त किये गये कि वह पानी को इमाम हुसैन के ख़ेमे तक न जाने दें। यह भी स्मरण रहे कि उसमें एक छः मास के बालक हज़रत अली असग़र भी थे। यह जल तीन दिवस बन्द रहा अथवा यूं कहना अधिक उचित होगा कि इमाम हुसैन को तथा उनके सम्बन्धी—साथियों को मृत्यु समय तक जल से भेंट न हुई। उस जल एंव भोजन की आपत्ति के कारण बालकों का दृश्य विशेषतः अत्यन्त करूणाजनक एंव अति विलाप पूर्ण था। अरब की वह तपती भूमि और फिर दोपहर की धूप के समय छोटे छोटे पवित्र पापहीन बालकों के "प्यास" "प्यास" के शब्द सुनकर पाहन का हृदय भी पसीज सकता है तथा "प्यास ने हमारा अन्त कर दिया" यह शब्द कठोर—हृदय मनुष्य से भी अश्रु—धारा प्रवाहित करा सकते हैं। परन्तु फिर भी उनके दृढ़—निश्चय में न कोई कमी थी एंव न अडिग विश्वास में पूर्व के अपेक्षाकृत कोई अन्तर।

6 मोहर्रम की तिथि आई। इमाम हुसैन ने अपने साथियों से कहा कि तुम को भली भांति ज्ञात होना चाहिए कि मैं यहां राज्य, सिंहासन एंव मुकुट प्राप्ति के लिए नहीं आया हूँ न मुझे युद्ध ही करना है बल्कि मैं सत्य मार्ग पर शीश—बलिदान करने आया हूँ। प्रेमियों! मैं ने यज़ीद को धार्मिक अधिष्ठाता स्वीकार नहीं किया है, यह मेरे शत्रु हैं मेरे रक्त के प्यासे हैं मेरे प्राण लेने पर तुले हैं। केवल मुझे ही मृत्यु के घाट उतारना चाहते हैं। यदि यह मेरा अन्त कर देंगे तुम्हें न पूछेंगे। तुम सब स्वतन्त्र हो जिसका मन चाहे स्वतन्त्रता पूर्वक प्रस्थान कर सकता है। यदि तुम को मेरे सामने लज्जा आती है तो देखो यह दीपक बुझाये देता हूं जिसका जी चाहे चला जाय। परन्तु कोई न गया। प्रत्येक की ज़बां पर यही शब्द थे यदि हमारी सत्तर बार निर्दयता से हत्या की जाए तो भी आप को छोड़ कर न जाएंगे। इस प्रकार इमाम हुसैन ने अपने साथियों को परखा, सभी पूर्ण एंव खरे उतरे एंव सभी सत्य और अटल सत्य की कसौटी पर पूर्ण एंव उचित थे। उस रात्रि को सांसारिक युद्धों की भांति इमाम

हुसैन तथा उनके साथी एंव सम्बन्धी भली भांति युद्ध की सामग्री जुटाने में नहीं लगे थे, अपितु प्रत्येक ख़ेमे से भगवद् प्रार्थना एंव ईश–भक्ति की ध्वनि सुनायी पड़ती थी।

जब 10 मोहर्रम की तिथि आई, अंधकार में ही हुसैन एंव उनके साथियों ने नमाज़ पढ़ी। तत्पश्चात् सूर्योदय हुआ जिसकी लालिमा इस बात की सूचक थी कि ऐ हुसैन! आज तो तेरा बाह्य अन्त है परन्तु वास्तव में जब तक मेरी यह लालिमा है, तब तक तेरा नाम भी जीवित है। जिनके भाग्य प्रबल होते हैं तथा जिनके शरीर नरक की अग्नि से बचना चाहते हैं वह सत्य की ओर आ ही जाते हैं। यज़ीदी सेना से हज़रत हुर इमाम हुसैन की ओर आए। आप के चरण रूपी कमलों परगिर कर क्षमा प्रार्थना की। धन्य हो दयासागर इमाम हुसैन जो इतनी विघ्न बाधाओं में आप को लाया था उसी को क्षमा कर दिया एंव वह भी इमाम हुसैन की सेना में आ गये। इसके बाद कायर सेना की ओर से एक बाण इमाम हुसैन अ0 की सेना की ओर आया।

अब युद्ध का आरम्भ था। इमाम हुसैन की सेना में वीरता, धीरता, सत्यता कर्तव्यपरायणता, उदारता, मित्रता, सज्जनता, प्रेम एंव स्नेह आदि दैवी–गुण विद्यमान थे तथा यज़ीदी सेना में दुष्टता, शत्रुता, ईषा, ईर्ष्या, दुर्जनता, असत्यता, दुराचार तथा कायरता आदि राक्षसी गुण उपस्थित थे। प्रथम इमाम हुसैन के साथियों ने अपने प्राण सत्य, धर्म एंव इमाम पर निछावर किये तथा पतंग रूपी साथी इमाम रूपी दीपक पर बलिदान हुए। एक एक प्रेमी–साथी ने ऐसे ऐसे वीरता के प्रदर्शन किये कि इतिहास के पृष्ठ उनके समक्ष प्रस्तुत करने के लिए खामोश हैं। उनमें भी हबीब, हुर, जुहैरे क़ैन आदि की वीरता विशेष उल्लेखनीय हैं एंव इतिहास के पृष्ठों मे स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। इसके बाद सम्बन्धियों की बारी आई। सर्वप्रथम हज़रत क़ासिम सुपुत्र इमाम हसन ने आज्ञा ली–रण क्षेत्र में आए तथा अनेकों शत्रुओं का दमन करने के पश्चात स्वर्गवासी हुए। तत्पश्चात हज़रत अब्बास सुपुत्र हज़रत अली गये, जिनका ध्येय लड़ना न था बल्कि बालकों एंव बालिकाओं विशेषकर हज़रत सकीना (इमाम हुसैन की सुपुत्री) की अत्यन्त करूणजनक दशा को देखकर जल प्राप्ति था। वह अत्यन्त वीर योद्धा थे। सहस्त्रों उन व्यक्तियों पर जो नदी के किनारे इसके पहरे दार थे कि जल इमाम अ0 के ख़ेमे तक न जाने पाये मगर अब्बास अ0 ने अपनी थोड़ी वीरता से नदी पर अधिकार पा लिया। जल हाथ में लिया परन्तु ये कहकर कि इमाम प्यासा है मैं पीलूँ पानी फेंका। मश्क भरी, परन्तु एक बाण ने उसमें छेद कर दिया। पानी बह गया हाथ पहले ही कट गये थे, एक हथियार होते हुए अब निहत्थे थे दुश्मनों ने हत्या कर डाली। इनके पश्चात् हज़रत अली अकबर सुपुत्र इमाम हुसैन रणक्षेत्र में आए सहस्त्रों शत्रुओं को मृत्यु –घाट उतारा तब स्वंय शहीद हुए। तब इमाम हुसैन अपने सुपुत्र हज़रत अली असग़र जिनकी उम्र छः मास थी हाथ पर लेकर गये तथा कायर सेना की ओर संकेत करके कहा यद्यपि : तुम्हरी दृष्टि में मैं पापी हूँ परन्तु इस बालक ने तो तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा है परन्तु दुष्ट एंव पापी ने एक ऐसा बाण मारा कि बालक अपने पिता के हाथ पर सवर्गवासी हुआ। अब इमाम हुसैन के पास कोई बलिदान न था, अब स्वयं अकेले थे अब इमाम हुसैन शिविर में आए, सबको अन्तिम प्रणाम किया तथा अपने सुपुत्र हज़रत सय्यदे सज्जाद अ0 जो रोग के कारण इतने बेहोश थे कि उनको इसका ज्ञान भी न था अपने पास बुलाया तथा कहा कि तुम अब इस धर्म के गुरू एंव पथ प्रदर्शक हो। तब आप घोड़े पर सवार होकर रण–क्षेत्र में आए तथा सर्व–प्रथम अपना परिचय करया कि मैं हज़रत मुहम्मद का पौत्र, हज़रत अली तथा फ़ातिमा का पुत्र तथा इमाम हसन का लघु भ्राता हूँ जो सब इस्लाम के अधिष्ठता एंव धार्मिक मार्ग–दर्शक थे। अतः इमाम हुसैन में हज़रत मुहम्मद की उदारता, हज़रत अली की वीरता, बीबी फ़ातिमा की कर्तव्यपरायण्ता तथा इमाम हसन की सहनशीलता थी। ऐसे हुसैन लड़ने चले परन्तु यह एक बेजोड़ युद्ध था। हज़रत इमाम हुसैन अकेले थे, तथा शत्रुओं की संख्या थी कई सहस्त्र एंव असंख्य । स्वयं युद्ध करना प्राण त्यागना सरल है परन्तु अपने पुत्रों, सम्बन्धियों, भ्राताओं एंव साथियों के दूख को सहन करना और बात है। ऐसे समय युद्ध करने में क्या मन लगेगा और उनका भी विचार केवल शहीद होना था युद्ध करना नहीं । सहस्त्रों की संख्या में शत्रुओं का दमन किया तथा वीरता की उच्चतम सीमा का प्रदर्शन करा दिया इतिहास के पृष्ठ इसके साक्षी हैं कि कर्बला के युद्ध

के पश्चात् वीरता के समय श्रेष्ठतम वीर हज़रत अली के बजाय इमाम हुसैन को ही कहा जाने लगा तथा वीरता के उपमान इमाम हुसैन कहलाने लगे। परन्तु वे जिस कारण युद्ध कर रहे थे उसका उन्हें ज्ञान था। शहीद होना ही उनका ध्येय था। दुश्मनों को केवल इतना बतलाना मात्र था कि यदि हम युद्ध करने लगे तो मैदान से तुम्हारे पैर उखड़ जायें। तत्पश्चात् ईश–आज्ञा से खडग यथास्थान रखी तथा उस कृपालु, दयालु, सर्वशक्तिमान एंव सर्वव्यापी परम्पिता परमात्मा की नमाज़ में अपने मस्तक को झुका दिया। ऐसा सुनहरा अवसर पाकर शत्रुओं ने अत्यन्त निर्दयता से हत्या कर डाली। तत्पश्चात उनके सिर को काटा गया तथा प्रत्येक अंग को शरीर से अलग कर दिया गया तथा नैज़े के ऊपर सिर को चढ़ाया गया तथा खुशियाँ मनाई जाने लगीं, बाजे बजाये गये तथा वह पापी चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे हुसैन की हत्या कर डाली गई यदि अब भी पुरस्कार की इच्छा हो तो उन के शव को घोड़ों द्वारा कुचल डालो। यातनाओं का अन्त इमाम हुसैन के ऊपर कर दिया गया।

सूर्य ढ़ल रहा था। सूर्य का अस्त होना यह बता रहा था कि कोई सूर्य समान मानव भी स्थायी धाम (स्वर्ग) की ओर जा रहा है। पक्षी गण कलख करते हुए अपने घोंसलों की ओर चले जा रहे थे, परन्तु कर्बला में आए हुए यात्री अब शहीद हो कर सदैव के लिए विश्राम कर रहे थे। प्रकाश के साम्राज्य का अन्त था तथा अंधकार की विजय थी। उसी प्रकार कायर तथा कायरता की, वीर तथा वीरता पर बाहा एवं प्रकट रूप में विजय थी। अब हम आप का ध्यान उस ओर ले चलें जहां इमाम हुसैन की महिलाएं थी। अभी यज़ीदी अत्याचारों का अन्त न हुआ था, उसने उन शिविरों (ख़ेमों) में आग लगवा दी। इमाम हुसैन की सम्बन्धी स्त्रियों को जिनके गृह से पर्दा–प्रथा चली आ रही थी, शिविरों से निकलना पड़ा, उनके सिरों से चादरें छीन ली गईं, आभूषणों को इस प्रकार उतारने के लिए खींचा गया कि उनके उस स्थान से रक्त बहने लगा। फिर एक रस्सी में दुष्ट एंव पापी यज़ीद ने 12 स्त्रियों के गले बंधवाए तथा बहुत ही अपमान किया एंव कष्ट पंहुचाया–जिसके पढ़ने के बाद पत्थर हृदय भी करूणा से भर जाता है तथा उसके नेत्रों से आंसू निकल पड़ते हैं। इमाम हुसैन के सुपुत्र सैय्यदे सज्जाद जो बीमार थे, उनके हाथों में हथकड़ियाँ, पैरों में बेड़ियां एंव गले मे तौक़ डाला गया। इसी प्रकार रोगी एंव अनाथों की सेवा तथा सुश्रषा होती है क्या? परन्तु कर्बला का संसार एंव वातावरण ही सब से अलग था एंव वह पापी मानव रूप में दानव की साक्षात् मूर्ति थे। अभी आप ने ऊपर ही पढ़ा और याद होगा कि किस किस प्रकार कौन कौन बलिदान हुआ तो उनकी स्त्रियां उनपर रोना चाहती होंगी, उन्हें आंसू बहाने की इच्छा होगी और आंसू बह ही रहे होंगे–कविवर अयोध्या सिंह उपाध्याय ''हरिओम के **अनुसारः**–

बात अपनी ही सुनाते हैं सभी
पर छिपाए भेद छिपता है कहीं
जब किसी का दिल पसीजेगा कभी
आंख से आंसू गिरेगा क्यों नहीं?

क्या इतने अधिक कष्ट उन महिलाओं के पुत्रों, माताओं पिता आदि पर पड़े होंगे– तो उन्हें शोक न हुआ होगा– अवश्य हुआ होगा। आंसू गिरते होंगे परन्तु यज़ीद की यह आज्ञा थी कि यदि किसी की आंख से आंसू गिरे तो उसे कोड़े से मारा जाए–इस प्रकार रोने–विलाप आदि से रोका जा रहा था तथा रोने पर उन महिलाओं को कोड़ों से कष्ट पँहुचाया जा रहा था। अधिक से अधिक कष्ट यातनायें जो हो सकती है वह पँहुचायी जा रही थीं परन्तु सत्य मार्ग यात्रियों ने उसे सहन किया और सत्य–पथ से क़दम न उठाया।

इमाम हुसैन तथा उनके सम्बन्धी तथा साथियों की मृत्यु पर उन्हें रोने न दिया गया तथा उनका अन्तिम संस्कार भली भांति न होने दिया गया एंव चेहलुम करने की आज्ञा न दी गई तथा यज़ीदी समझते थे हमने हुसैन की मृत्यु पर विलाप न करने दिया परन्तु निःसन्देह उनको इसका ज्ञान न था कि वह दिन दूर नहीं जब इन्ही का शोक चारों दिशाओं एंव संसार के प्रत्येक कोने में मनाया जाऐगा तथा शोक मनाकर इमाम हुसैन के प्रति श्रद्धाभाव रखेंगे एंव श्रद्धांजलियां अर्पित करेंगे तथा यज़ीद को धिक्कार के शब्दों द्वारा स्मरण करेंगे। यही आज दीख पड़ रहा है कि इमाम हुसैन के प्रेमी मुहर्रम के प्रथम दिवस से ताज़िये रखते हैं। उसके आगे शोक संगीत पढ़ते हैं तथा हुसैन की करूणाजनक मृत्यु पर आंसू बहाते हैं।

2 माह 8 दिवस तक प्रातः काल से लेकर अर्ध रात्रि अथवा सम्पूर्ण रात्रि कोई भी ऐसा क्षण नहीं जिस समय मजलिस न होती हो, तथा उसमें हुसैन की करूणाजनक मृत्यु पर लोग अश्रु धारा प्रवाहित करते हैं तथा उसमें सहस्त्रों की संख्या में हुसैन के प्रेमी सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। यूँ तो दो मास 8 दिवस निरन्तर यह कार्य अत्यन्त भली प्रकार होता है परन्तु 3 दिन इसका कार्यक्रम अति अधिक विस्तृत तथा सामूहिक हो जाता है। प्रथम अशरे (यह मुहर्रम की 10 तारीख को होता है यह वह दिवस है जिस दिन हज़रत इमाम हुसैन एंव उनके सम्बन्धी साथी सत्य मार्ग पर बलिदान हुए) इस दिन इमाम–प्रेमियों को ताज़िये रखते 10 दिन व्यतीत हो जाते हैं अतः काफ़ी प्रेमी इसी दिन ताज़िये उठाते हैं उसके सामने ऐसे हृदयस्पर्शी शोक संगीत पढ़ते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति रोने लगता है तथा सारा वातावरण शोकमय हो जाता है। इसी प्रकार पढ़ते हुए वे कर्बला जाते हैं और वहीं दफ़न कर देते हैं। बहुत सी शोक–संगीत पढ़ने वाली गोष्ठयां भी होती हैं जिनमें काफ़ी व्यक्ति सम्मिलित रहते हैं वे जिस समय सब मिलकर हुसैन हुसैन कहते हैं तो प्रत्येक वस्तु तथा प्रत्येक स्थान से यही ध्वनि सुनाई पड़ती है–पत्ते पत्ते से यही शोकमय आवाज़ आती है। संध्या तक यही कार्यक्रम रहता है इसी दिन ही बलिदान का दिन था और इमाम हुसैन इत्यादि शहीद हुए थे अतः मुसलमान शिया दिन भर न भोजन करते हैं न जल पीते हैं। दूसरा शोकमय एंव महत्वपूण्र दिवस चेहलुम है। इस्लाम धर्मानुसार किसी व्यक्ति की मृत्यु के 40 दिन के भीतर एक विशेष दिन निश्चित करके मृतक व्यक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं कि अल्लाह उस मृत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा उसके पापों को क्षमा करके स्वर्ग में पंहुचा दे परन्तु कर्बला वालों का यह भी दिन न मनाया गया उनको शोक न करने दिया गया। अतः उनके प्रेमी काफ़ी संख्या में इस दिवस भी ताजिये उठाते हैं। गोष्ठियां अशरे की भांति इस दिवस भी की जाती है। इस दिन बहुत अधिक हाहाकार होता है। विलाप किया जाता है तथा अत्यधिक शोक मनाया जाता है। केवल अन्तर इतना है कि मुहर्रम का अशरा बलिदान दिवस होता है अतः अधिकतर शोक संगीत शहीद क्योंकर हुए इससे सम्बन्धित होते हैं परन्तु चेहलुम के दिन हुसैन के पश्चात उनकी आदर्श महिलाओं पर क्या–क्या अत्याचार हुए उनको कौन कौन से कष्ट पँहुचाए गये, इसका वर्णन एंव पाठ होता है, तृतीय महत्व पूर्ण दिवस आठवीं (2 माह 8 दिवस पश्चात) है इसको शोक दिवसों का अन्तिम दिन समझाा जाता है अतः इस दिन के हाहाकार का, विलाप का, शोक–गान का एंव रोने का वर्णन अवर्णनीय है। सबसे अधिक गोष्ठियां इसी दिन कर्बला जाती है। कई कई मीलों दूर भी "हुसैन" "हुसैन" की आवाज़े सुनाई देती हैं। ऐसे दिल हिला देने वाले संगीत पढ़े जाते हैं कि श्रोतागणों की आंखों से अश्रुओं की एक झड़ी सी लगी रहती है– जिनके आंसू नहीं निकलते उनका हृदय अवश्य टुकड़े टुकड़े हो जाता है। ताज़िये भी उठते हैं। लोगों के सिरों पर न टोपी होती है न पैर में जूते इसी दशा में कर्बला जाते हैं। किसी हिन्दू व्यक्ति ने इन सब दृश्यों के देखने के बाद कहा था "कि इमाम हुसैन ऐसे धीर, वीर, गुणी, योद्धा, पराक्रमी, सत्यवादी दृढ़निश्चयों एंव स्नेही व्यक्ति के लिए इतना शोक मनाना कोई बड़ी बात नहीं है –शोक मनाना क्या है? इतने अधिक अत्याचार ही उनपर किये गये कि आंख में अश्रु आ जाते हैं एंव शोक मनाने पर हम बाध्य हो जाते हैं। मेरा पूर्ण विश्वास है कि यदि उन पर किये गये सभी अत्याचारों, कष्टों एंव यातनाओं का वर्णन किया जाये तो पाहन–हृदय मोम हो जाएं अर्थात अश्रु उससे रोके न रूकें"

ऐ मनुष्यों! ध्यान तो दो विचार तो करो किसी व्यक्ति पर थोड़ी सी विपत्तियाँ पड़ते देखकर तुम्हारा हृदय पसीज जाता है, किसी पुस्तक अथवा नाटक के पात्र पर आपत्तियां होते देखकर तुम्हारे नेत्रों में अश्रु आ जाते हैं, हरिश्चन्द्र अथवा श्रवण कुमार के जो विघ्र (धन), बाधायें उनके मार्ग में पड़ती दिखाई जाती है, तो तुम्हारे नयनों से अश्रु धारा बह निकलती है । जबकि ये विपत्तियां इमाम हुसैन की विपत्तियों को देखते हुए नाम मात्र को है फिर भी तुम रोते हो तो हम इतने अधिक अत्याचार और अपने धार्मिक मार्ग प्रदर्शक पर होते हुए सुनें और न विलाप करें। रोना तो एक प्राकृतिक एंव स्वाभाविक वस्तु है जब मानव अत्याचारों का वर्णन सुनेंगे उनके नेत्र सजल हो ही जाएंगे। कविवर हरिऔध ने दूसरों के कष्ट अत्याचार देखने और सुनने वाले व्यक्ति पर जो आंसू न बहाए

(बक़िया पेज नं0 28 पर................)

आंखों से देखने के लिए पपोटे ऊपर खींचकर रूमाल से बांधना पड़े और घोड़े पर बैठने के लिए कमर को कस कर बांधना भी पड़ा और इन्हीं बहत्तर में नाबालिग़ (अव्यस्क) बच्चे भी थे, जिन में एक छः महीने का दूध पीता बालक भी था। इन शहीदों की जीवनियां पढ़कर बरबस यह कहना ही पड़ता है कि कर्बला के मैदान में मनुष्यता और बर्बता का खुला हुआ मुक़ाबला था, जिस में शहीद होने वालों ने अपनी जान की बाज़ी लगा कर मैदान जीत लिया।

इन समस्त घटनाओं व समयों के सम्मुख यह कहना ही पड़ता है कि इमाम हुसैन ने मनुष्यता को उच्च स्थान दिया और सज्जनता का सिर गर्व से ऊंचा हो गया। इस लिए हर व्यक्ति के वास्ते जिस के हृदय में मनुष्यता की श्रेष्ठता और व्यक्तित्व का दर्द है, यह आवश्यक है कि वह इमाम हुसैन की याद बनाए रखे और कर्बला की घटना से अपने दैनिक जीवन में पाठ लेता रहे। इमाम हुसैन के व्यक्तित्व से लेश मात्र भी प्रभावित हो जाने से हम में बहुत सी विशेषताऐं उत्पन्न हो सकती हैं और उन की याद हमको धार्मिक कट्टरता के स्तर से ऊंचा करके मनुष्यों की बीच में भाई–चारे का सम्बन्ध स्थापित करती है। मोहर्रम की मजलिसों को अगर धार्मिक रीति–रिवाज मान भी लें, तो शायद यही एक ऐसी रीति–रिवाज है, जिसमें प्रत्येक धर्म का व्यक्ति बराबरी के नाते एक तरह से बैठकर बराबर से सम्मिलित हो सकता है। यही वह धार्मिक सभा है, जिस में प्रत्येक धार्मिक विचार का व्यक्ति, केवल मनुष्य होते हुए एक सम्पुर्ण व्यक्ति की याद में, सांसारिक मोह को त्याग कर, आत्मिक विशेषताओं से प्रफुल्लित होते हुए अपने जीवन के हेतु आदर्श प्राप्त करता है। 

(इमामिया मिशन लखनऊ का प्रकाशन नं0 484 मोहर्रम 1386 हि0 /अप्रैल 1966)

ज़िन्दगी सकीना की

बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी साहिबा

सब्र की अलामत है ज़िन्दगी सकीना की
बन्दगी की रिफ़अत है ज़िन्दगी सकीना की
मश्क ये अलम में है या अतश की है तारीख़
मक़सदी इशाअत है ज़िन्दगी सकीना की
ज़िन्दगी–ए–सरवर है उलफ़ते सकीना में
और पदर की उलफ़त है ज़िन्दगी सकीना की
इस तरह बलाओं में लोग मर ही जाते हैं
कोहे अज़्मो हिम्मत है ज़िन्दगी सकीना की
अब हुसैन की सूरत सरपरस्त हैं ज़ैनब
उनको एक दौलत है ज़िन्दगी सकीना की
हक़ के वास्ते जीना हक़ के वास्ते मरना
किस क़दर हक़ीक़त है ज़िन्दगी सकीना की
मश्क दे के अम्मू को सर झुका के कहती हैं
आपकी बदौलत है ज़िन्दगी सकीना की
जुरअते सकीना से हिम्मतों को निस्बत है
अज़्म से इबारत है ज़िन्दगी सकीना की
ज़िन्दगी रहे हक़ में बहरे रब बसर की है
कुल की कुल इबादत है ज़िन्दगी सकीना की
मक़सदे सकीना से है नदा को बस निस्बत
शायरी की क़िस्मत है ज़िन्दगी सकीना की

(पेज नं0 24 का बक़िया...................)

उसे अवगुणी तथा पापी कहा हैः–

है हमारे अवगुणों की भी न हद।
हाय गरदन भी उधर फिरती नहीं।।
देख करके दूसरों का दुख दर्द।
आंख से दो बूंद भी गिरती नहीं।।

ऐ अल्लाह! तू उन मनुष्यों को सुबुद्धि प्रदान कर जो इन दुश्यों को सुनकर विलाप नहीं करते एंव शोक मनाने वालों को खिल्ली पात्र समझते हैं उन पर हंसते हैं एंव रोने सी स्वाभाविक, प्राकुतिक वस्तु को घृणा दृष्टि से देखते हैं। हमारे लखनऊ के एक नवयुवक उच्च कवि 'माथुर' जी ने इसको भली प्रकार प्रदर्शित किया हैः–

इन्सान तो ग़म का आदी है।
फ़ितरत के लिए ग़म होता है।
मज़लूम अगर मरता है कोई।
हर क़ौम में मातम होता है।।

परन्तु केवल विलाप करना हीं पर्याप्त न होगा अपितु इमाम हुसैन का बलिदान जो ईश–भक्ति दृढ़ निश्चय, अडिग वीरता, धीरता, वचन पालन एंव कर्तव्यपरायण्ता आदि सदगुणों को संदेश एंव शिक्षा दे रहा है, उसका भी पालन करना होगा। तभी हम इस योग्य होंगे कि हुसैन के प्रेमी कहलाऐं।

(इमामिया मिशन, लखनऊ प्रकाशन नं0 262)